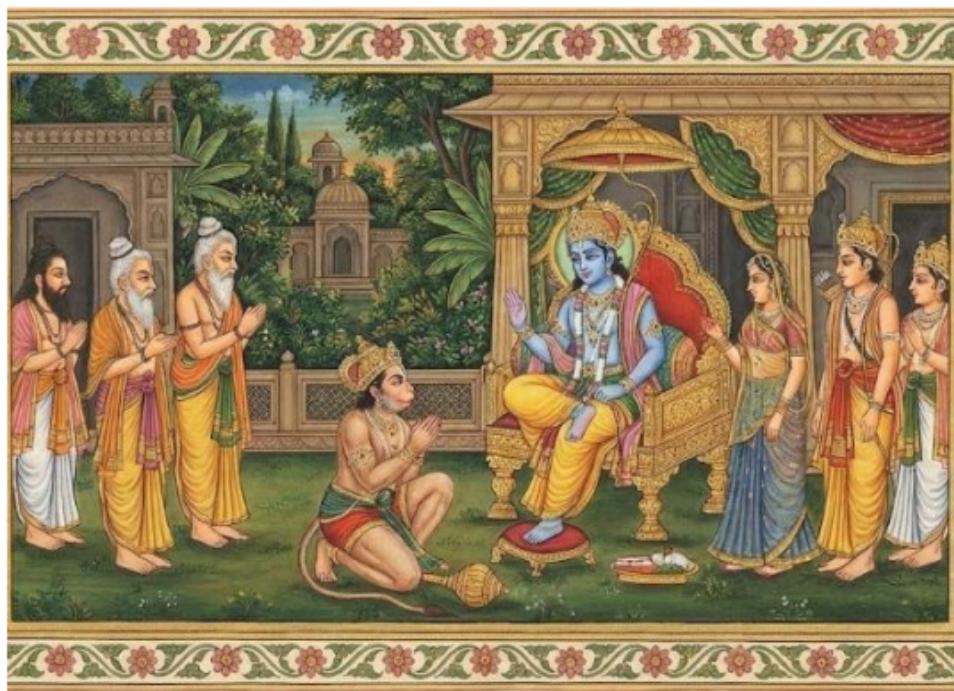


श्री हनुमान चालीसा



दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु
मुकुरु सुधारि ।

बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु
फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन
कुमार ।

बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु
कलेश विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।

अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।

कुमति निवार सुमति के संगी ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।

कानन कुँडल कुँचित केसा ॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे ।

काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन ।

तेज प्रताप महा जगवंदन ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर ।

राम काज करिबे को आतुर ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।

राम लखन सीता मनबसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा ।

विकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।

रामचंद्र के काज सवारै ॥

लाय सजीवन लखन जियाए ।

श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।

तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावै ।

अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।

नारद सारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।

कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।

राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना ।

लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू ।

लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही ।

जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।

होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना ।

तुम रक्षक काहु को डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै ।

तीनों लोक हाँक तै कापै ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै ।

महावीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरे सब पीरा ।

जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

संकट तै हनुमान छुडावै ।

मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।

तिनके काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।

सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा ।

है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संत के तुम रखवारे ।

असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।

अस बर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।

सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै ।

जनम जनम के दुख बिसरावै ॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई ।

जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

और देवता चित्त ना धरई ।

हनुमत से ई सर्व सुख करई ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गुसाई ।

कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।

छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा ।

होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।

कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

॥ उमापति महादेव की जय ॥

॥ बोलो रे भई सब सन्तन की जय ॥

Downloaded from <https://vedpuran.net>